संगोष्ठी-स्थल

समिति कक्ष
केन्द्रीय पुस्तकालय
एवं
गांधी अध्ययनपीठ सभागार
म0 गां0 काशी विद्यापीठ
वाराणसी

निर्देश :

1. शोध छात्र-छात्राओं को पंजीकरण हेतु पाँच सौ रुपये तथा अध्यापक-अध्यापिकाओं को सात सौ रुपये देने होंगे।
2. पंजीकरण शुल्क संगोष्ठी-स्थल पर भी देय होगा।
3. शोध-पत्र-वाचन के पश्चात् शोध-पत्र की टंकित प्रति (Kruti Dev 010) एवं सी0डी0 संयोजक के पास जमा करना अनिवार्य है।
3. प्रतिभागियों को किसी प्रकार का यात्रा-भत्ता देय नहीं है।
4. प्रतिभागियों को आवास की व्यवस्था स्वयं करनी होगी।
5. संगोष्ठी के मध्य भोजन एवं चाय की व्यवस्था है।

राष्ट्रीय संगोष्ठी

समकालीन चुनौतियाँ : लोक साहित्य और लोक संस्कृति

संरक्षक
डॉ0 पृथ्वीश नाग
कुलपति
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।

सलाहकार - मण्डल
प्रो0 उमारानी त्रिपाठी
प्रो0 अवधेश कुमार सिंह
प्रो0 सुरेन्द्र प्रताप
प्रो0 शम्भुनाथ त्रिपाठी
प्रो0 श्रद्धानन्द
डॉ0 मुनीन्द्र तिवारी

अध्यक्ष
प्रो0 शिवकुमार मिश्र
अध्यक्ष, हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
मो0 : 09415868072

संयोजक
प्रो0 अनुराग कुमार
मो0 : 09415257465

सह-संयोजक
प्रो0 रमेश चन्द्र
मो0 : 09792118811
डॉ0 सुरेन्द्र प्रताप सिंह
मो0 : 09532921835

आयोजन सचिव
प्रो0 निरंजन सहाय
मो0 : 09451777960

सहयोगी
डॉ0 राजमुनि
डॉ0 रामाश्रय सिंह
डॉ0 विजय कुमार रंजन
डॉ0 अनुकूल चन्द राय
डॉ0 प्रीति
डॉ0 के0 वी0 गौडर

राष्ट्रीय संगोष्ठी

समकालीन चुनौतियाँ : लोक साहित्य और लोक संस्कृति

21, 22 दिसम्बर, 2016

आयोजक

हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ,
वाराणसी।

सहयोग

संस्कृति विभाग, उ0 प्र0

राष्ट्रीय संगोष्ठी

समकालीन चुनौतियाँ : लोक साहित्य और लोक संस्कृति

21 एवं 22 दिसम्बर, 2016

लोक साहित्य लोक मन की सहज अभिव्यक्ति है। यह अभिव्यक्ति विविधरूपा है - कहीं सुरीली तान की अनुगूँज है तो कहीं लोक कथाओं की अविस्मरणीय यात्रा। कहीं मुहावरों-लोकोक्तियों का संसार मुखर है तो कहीं प्रतिरोध के अगन की ताप। लोक संस्कृति लोक संस्कारों को खूबसूरती से सहेज कर रखती है। समन्वय की विराट चेष्टा लोक संस्कृति की मुख्य विशेषता है। जो लोक को महज ग्रामीण जीवन तक सीमित कर आँकने की कवायद करते हैं, उन्हें लोक और शास्त्र के द्वन्द्व में लोक के पक्षधर पं0 हजारी प्रसाद द्विवेदी के इस कथन को एक बार फिर देख लेना चाहिए। द्विवेदी जी के अनुसार, "लोक शब्द का अर्थ जनपद या ग्राम्य नहीं है, बल्कि नगरों और गाँवों में फैली वह समूची जनता है, जिनकी व्यावहारिकता का आधार पोथियाँ नहीं हैं। ये लोग नगर में परिष्कृत, रुचि सम्पन्न तथा सुसंस्कृत समझे जाने वाले लोगों की अपेक्षा अधिक सरल और अकृत्रिम जीवन के अभ्यस्त होते हैं और परिष्कृत रुचि वाले लोगों की समूची विलासिता और सुकुमारता को जीवित रखने के लिए जो भी वस्तुएँ आवश्यक होती हैं, उनको उत्पन्न करते हैं।" कहना न होगा किसी जीवित सभ्यता के लिए लोक साहित्य और लोक संस्कृति मेरुदण्ड का काम करते हैं।

बाजार आधारित वैश्विक संस्कृति की शोरगुल ने युवा पीढ़ी को लोक साहित्य और लोक संस्कृति की विराट परम्परा से एक हद तक दूर किया है। ऐसे में हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग ने लोक साहित्य और लोक संस्कृति के जीवन्त रूप से नयी पीढ़ी को रू-ब-रू कराने का निर्णय लिया है, जिसकी स्वाभाविक परिणति है-यह दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी।

इस विविधरूपा संसार पर अनेक रूपों में विचार-विमर्श की परम्परा रही है। हर्ष है कि पुरबिया संस्कृति के केन्द्र की गौरवशाली संस्था महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के हिन्दी तथा आधनिक भारतीय भाषा विभाग की तरफ से **'समकालीन चुनौतियाँ : लोक साहित्य और लोक संस्कृति'** विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। इस संगोष्ठी में इस क्षेत्र के जाने-माने विद्वान एवं कलाकार शिरकत करेंगे। विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय के अध्यापकगण एवं शोधार्थी भी अपने दृष्टिकोण आलेख में प्रस्तुत करेंगे।

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

21, 22 दिसम्बर, 2016

शोधपत्र हेतु संगोष्ठी के विचार-बिन्दु

1. लोक साहित्य, लोक संस्कृति और लोक विश्वास के विविध संदर्भ में
2. लोक साहित्य की परम्परा
3. लोक साहित्य एवं प्रतिरोध की संस्कृति
4. लोक साहित्य का पुरबिया रंग
5. लोक कथाएँ : अन्तर्मन की बहुरंगी उड़ान

संगोष्ठी विवरण

21 दिसम्बर, 2016

संगोष्ठी-स्थल - समिति कक्ष, केन्द्रीय पुस्तकालय
म0 गां0 काशी विद्यापीठ, वाराणसी
उद्घाटन सत्र - पूर्वाह्न 10.00 बजे
प्रथम सत्र - पूर्वाह्न 11.00 बजे से 1.30 बजे तक
विषय - लोक साहित्य की अवधारणा और शास्त्र का पक्ष
भोजनावकाश - 1.30 बजे से 2.00 बजे तक
द्वितीय सत्र - 2.00 बजे से 4.00 बजे तक
विषय - लोक साहित्य का ऐतिहासिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष

22 दिसम्बर, 2016

तृतीय सत्र - पूर्वाह्न 9.00 बजे से (शोधपत्र का वाचन)
स्थल - समिति कक्ष, केन्द्रीय पुस्तकालय, विद्यापीठ परिसर

चतुर्थ सत्र - 11.30 बजे से 1.30 बजे तक
सांस्कृतिक कार्यक्रम - लोक रंग
भोजनावकाश - 1.30 बजे से 2.00 बजे तक
समापन सत्र - 2.00 बजे से 4.00 बजे तक
स्थल - गांधी अध्ययनपीठ सभागार
म0 गां0 काशी विद्यापीठ, वाराणसी

पंजीकरण प्रपत्र

समकालीन चुनौतियाँ : लोक साहित्य और लोक संस्कृति

21, 22 दिसम्बर, 2016

प्रतिभागी का नाम.....

पिता का नाम.....

माता का नाम.....

पद.....

संस्था का नाम.....

.....

.....

.....

प्रस्तुत शोध-प्रपत्र का शीर्षक

.....

.....

.....

.....

दिनांक : ..... हस्ताक्षर प्रतिभा

दूरभाष : .....

निर्देश पृष्ठांकित है।